2 दिसम्बर 2011, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये
जी-जागरण पर
प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 17 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
दिसम्बर (प्रथम), 2011 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में होने वाले पंचकल्याणक हेतु -

महाराष्ट्र एवं कर्नाटक में पंचकल्याणक आमंत्रण रथ प्रवर्तन संपन्न

महाराष्ट्र एवं कर्नाटक में दिनांक 17 नवम्बर से 29 नवम्बर तक पंचकल्याणक आमंत्रण रथ प्रवर्तन संपन्न हुआ। यह रथ औरंगाबाद से प्रारम्भ होकर अंबड़, देवलगाँवराजा, चिखली, डसाला, डोणगांव, मालेगांव, कारंजा, वाशिम, रिसोड, हिंगोली, सेलू, वसमतनगर, सोलापुर, आणंद, गुलबर्गा, इण्डी, बीजापुर, बेलगांव, तीरदाल, कोल्हापुर, सांगली, चन्द्रपुर, नातेपुते होते हुए अकलूज पहुँचा।

प्रत्येक स्थान पर नृत्यगान, बैण्डबाजे के साथ रथ का धूमधाम से स्वागत हुआ व जुलुस, शोभायात्रा व नगर भ्रमण कराया गया। सभी स्थानों पर पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला। इनके अतिरिक्त पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बेलगांव एवं पण्डित सुमितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा भी रथ में सम्मिलित थे। महाराष्ट्र के अनेक स्थानों पर पण्डित संतोषजी शास्त्री सावजी ने भी रथ का बहुत उत्साह से साथ दिया।

प्रत्येक जगह पर पंचकल्याणक का बड़े उत्साह व भक्तिभावपूर्वक सभी लोगों को पंचकल्याणक में आने का आमंत्रण दिया गया। सभी स्थानों पर महाविद्यालय के जो-जो स्नातक छात्र हैं, उनका उत्साह और सहयोग देखते ही बनता था। प्रत्येक स्थान पर समाज ने रथ का भरपूर स्वागत किया तथा पंचकल्याणक महोत्सव में जयपुर आने हेतु कलशों एवं आवास आदि की बुकिंग भी करायी।

अनेक स्थानों से तो 50-50, 60-60 लोगों ने एक साथ जयपुर आने हेतु आवास की बुकिंग कराई एवं रेल के टिकिट बुक करा लिये हैं।

निश्चय कल्याणक

तीर्थंकरों व उनके
जिनबिम्बों के कल्याणक तो
व्यवहार कल्याणक हैं
ऐसे कल्याणक तो आत्मन् तूने अनेक किए
पर अपने कल्याण के प्रति तू रहा उदासीन,
इसीलिए तेरा भव-भ्रमण दूर नहीं हुआ
उपयोगस्वरूपी आत्मा में
आत्मगुणों का धारण गर्भ कल्याणक है
और आत्मरूप परिणमन जन्म कल्याणक है
ऐसे कल्याणक आत्मन् तूने कभी नहीं किए
इसीलिए अन्यान्य गर्भ में
वास करते हुए, जन्म लेते हुए
संसरण कर रहा है मरण के लिए
इस गर्भ-जन्म-मरण के बीच
कभी तुम्हारा उपयोग नहीं पलटा
इसलिए तप-केवलज्ञान-मोक्ष कल्याणक नहीं आए
बीज के बिना भला अंकुर-शाखा-फूल-फल कैसे आते ?
आत्मन् अपने उपयोग में उपयोग को धारण कर
तब परिणति उपयोगमय होगी
और तेरे कल्याणक निश्चय होंगे
वरना तू व्यवहार कल्याणकों में अटककर
निश्चय कल्याणक से भटक जाएगा। **- बाहुबली भोसगे**

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा आयोजित

श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

(मंगलवार, 21 फरवरी से सोमवार, 27 फरवरी 2012)

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, स्थित श्री सीमंधर जिनालय एवं त्रिमूर्ति जिनालय के नवीनीकरण के अवसर पर होने वाले ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव अनेक ऐतिहासिक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न होगा। महा महोत्सव के **प्रधान प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना एवं प्रतिष्ठाचार्य पण्डित रमेशचन्दजी बांझल इन्दौर** हैं। इस अवसर पर लगभग 750 विद्वानों का अपूर्व समागम प्राप्त होगा।

सप्त दिवसीय आयोजनों के ऐतिहासिक क्षणों के प्रत्यक्षदर्शी बनने हेतु जयपुर ठहरने का **आवास आरक्षण फार्म यदि आपने अभी तक भी भरकर नहीं भेजा है, तो शीघ्र भेजें।** आरक्षण फार्म जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान में भी प्रकाशित किये जा चुके हैं।

सम्पादकीय – 69

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– १११

मूल गाथा इसप्रकार है –

ति त्थावरतणुजोगा अणिलाणलकाइया य तेसु तसा।
मणपरिणामविरहिदा जीवा एइंदिया णेया।।१११।।

(हरिगीत)

उनमें त्रय स्थावर तनु त्रस जीव अग्नि वायु युत।
ये सभी मन से रहित हैं अर एक स्पर्शन सहित हैं।।१११।।

उन पाँचों स्थावर कायों में तीन (पृथ्वीकायिक अप्कायिक और वनस्पतिकायिक) जीव स्थानशील होने के कारण स्थावर संयोग वाले हैं तथा अग्निकायिक और वायुकायिक जीवों की चलन क्रिया देखकर व्यवहार से इन्हें त्रस कहा गया है। निश्चय से तो ये भी स्थावर, नामकर्म की आधीनता के कारण स्थावर ही हैं। ये पाँचों मन रहित एकेन्द्रिय जीव हैं।

इस गाथा पर अमृतचन्द की टीका नहीं हैं।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी पद्य में कहते हैं –

(दोहा)

तीनों थावर काय हैं, आग वायु त्रस रूप।
मन–परिणाम–रहित सदा, एकेन्द्रिय अरूप।।२७।।

(सवैया इकतीसा)

पृथ्वी तोय हरीकाय तीनौं नामकर्म लसैं,
काय के संजोग सेती थावर कहावै है।
आग वायु थावर है यद्यपि तथापि दौनौ,
चलन के जोग सेती त्रसता लहावै है।।
मनसा बिना ही एक इन्द्रिय सरूप सवै,
थावर नामकर्म कै उदय मैं रहावै है।
तातैं है थावर काय निहचै स्वरूप पाचौं,
जिनराज वानी विषैं जहाँ तहाँ गावै हैं।।२८।।

कवि का कहना है कि पृथ्वी–पानी एवं हरितकाय – तीनों ही स्थानशील होने से तथा स्थावर नामकर्म के उदय के कारण स्थावर हैं ही, चलन स्वभावी होने के कारण व्यवहार से त्रस कहे गये हैं, परन्तु निश्चय से स्थावर कर्मोदय के कारण पाँचों ही स्थावर काय हैं।

इस गाथा पर व्याख्यान करते हुए गुरुदेवश्री कानजीस्वामी वैराग्य प्रेरक उपदेश में कहते हैं कि ''आत्मा स्वभाव से तो अनन्तगुणों का पिण्ड है। जो उस पूर्ण पवित्र आत्मा की भावना नहीं भाता वह एकेन्द्रियपने को प्राप्त होता है।

अपने स्वभाव को भूलकर पूर्व में जैसे शुभाशुभ भाव किए, उनके फल में नीच–ऊँच गति एवं रोग व निरोगता होती है।

यह जीव मन रहित एकेन्द्रियादि की हीन पर्यायों में इसकारण जाता है कि वह अपने स्वभाव की पहचान से चूक जाता है, इसकारण हीनदशा होते–होते एकेन्द्रिय में चला जाता है।

इसप्रकार यह एकेन्द्रिय पर्याय में अधिकतम ७० कोड़ाकोड़ी सागरोपम तक रहता है। इसीप्रकार वादर निगोद अग्नि वगैरह में अधिकतम सत्तर कोड़ाकोड़ी सागर तक रहता है। अपने आत्मा का तीव्र विरोध रखे तो एकेन्द्रियपने की योग्यता से वहीं जन्म–मरण किया करता है।

वायुकाय वाला पृथ्वी हो जाता। इसीप्रकार एकेन्द्रिय में ही बदल–बदल कर जन्म–मरण करते हुये असंख्य पुद्गलपरावर्तन तक वहाँ बिताता है। इसलिए कहते हैं कि राग में रुचि तथा निमित्तों की पराधीनता की भावना करने योग्य नहीं है।

यह बात सर्वज्ञ के सिवाय अन्यत्र कहीं नहीं है। अतः सर्वज्ञ के अवलम्बन से निजस्वभाव का निश्चय करके उसमें जमना रमना ही धर्म है। इसे कभी भूलना नहीं चाहिए।

इसप्रकार इस गाथा में पाँचों स्थावर काय होने पर आग व वायु को क्षेत्र से क्षेत्रांतर चलने की अपेक्षा त्रस कहा गया है। गुरुदेवश्री ने तो वैराग्य प्रेरक बात कहकर स्थावर काय में अनन्त काल तक न रहना पड़े – ऐसी प्रेरणा दी है। ●

गाथा– ११२

विगत गाथा में स्थान शील होने की अपेक्षा से पृथ्वीकायिक, अपकायिक और वनस्पतिकायिक को स्थावर तथा शेष दो को गतिशील होने से त्रस कहा है।

अब प्रस्तुत गाथा में कहते हैं कि ये पाँचों ही मन रहित एकेन्द्रिय हैं। मूल गाथा इसप्रकार है –

एदे जीवणिकाया पंचविधा पुढ़विकायियादीया।
मणपरिणामविरहिदा जीवा एइंदिया णेया।।११२।।

(हरिगीत)

ये पृथ्वी कायिक आदि जीव निकाय पाँच प्रकार के।
सभी मन परिणाम विरहित जीव एकेन्द्रिय कहे।।११२।।

इन पृथ्वीकाय आदि पाँच प्रकार के जीवनिकायों को मन परिणाम रहित एकेन्द्रिय जीव कहा है।

टीका में आचार्यश्री अमृतचन्द्रदेव कहते हैं कि पृथ्वीकाय आदि जीवों के एकेन्द्रिय के योग्य ज्ञान के आवरण के क्षयोपशम के कारण तथा शेष चार भावेन्द्रियों के तथा मन के आवरण का उदय होने से वे मन रहित एकेन्द्रिय हैं।

अब इसी गाथा के भाव को कवि हीरानन्दजी पद्य में कहते हैं –

(दोहा)

इतने पृथिवी आदि हैं, काय पाँच परकार।
मन परिणाम रहित सदा एकेन्द्रिय अनिवार।।३०।।

(सवैया इकतीसा)

एई पृथ्वी कायकादि भेद थावर अनादि,
पाँच परकार सारे जग अनिवार हैं।
सूच्छिम और बादर दोइ–दोई विधि सेती,
एक–एक काय विषै नाना विस्तार है।।
फास एकेन्द्रिय–आवरण कै विनास भये,
जथाशक्ति जानै एकदेह का विचार है।
सेष इन्द्री–मन–आवरण उदेरूप लसै,
ऐसा भेद जानै बिना कैसे निसतार है।।३१।।

(दोहा)

थावर काया फरि सदा, सकल लोक भरपूर।
जथा भेद ते नहिं लखै, जे आतम अतिकूर।।३२।।

यहाँ यह ज्ञातव्य है कि आत्मा की उपेक्षा करने वाले और विषय–कषायों में रमनेवाले अज्ञानी जीव आर्त–रौद्र ध्यान करके मृत्यु को प्राप्त होकर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु व वनस्पतिकाय में जन्म लेते हैं। ये पाँचों प्रकार के जीव मन और एकेन्द्रिय के सिवाय चार इन्द्रियों के बिना मात्र एक इन्द्रिय की पर्याय में ही अनन्तकाल बिताते हैं।

अतः हमें आत्मा की उपेक्षा नहीं करना चाहिए।

इस गाथा पर प्रवचन करते हुए गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि पृथ्वी आदि पाँच प्रकार के एकेन्द्रिय जीव मन रहित हैं। वे मन रहित एक इन्द्रिय इसकारण हुए कि उन्होंने पूर्व जन्मों में आत्मा को नहीं जाना, आत्मा की जानकारी करने की उपेक्षा की। जब यह जीव पंचेन्द्रिय मनुष्य था तब केवलज्ञान पा सके – ऐसी योग्यता थी, परन्तु इसने आत्मा का यथार्थ ज्ञान न करके आर्तध्यान–रौद्रध्यान करके विकार की भावना की थी, राग–द्वेष किए इस कारण एकेन्द्रिय हुआ है।

गुरुदेव श्री करुणा करके कहते हैं कि इस शरीर की स्थिति स्वस्थ अवस्था में २५/५० वर्ष की ही होती है, परन्तु उस समय भी शुद्ध आत्मा की पहचान न करके ऐसी औपाधिक विकारी भावों में उलझा रहता है जिनका कभी अंत ही नहीं आता। जिस शरीर से तेरा परिचय है वह तो अन्त में यही रह जायेगा और जिससे तेरा परिचय नहीं – ऐसा तू अपने कर्मफल के कारण चौरासी के चक्कर में फँस जायेगा; क्योंकि अज्ञानी को अपने ही आत्मा से परिचय नहीं है। इसी कारण एकेन्द्रिय आदि की हीनदशा में पहुँच जाता है। त्रस पर्याय का अधिकतम काल दो हजार सागर है, उसके बाद तो स्थावर में जाना ही है। ऐसा ही नियम है। वहाँ एकेन्द्रिय अवस्था में ही बारम्बार मरण करके अनंतकाल बिताता है, तब कहीं भाग्योदय से पुनः त्रस पर्याय में आता है।

छहढाला में दौलतरामजी ने कहा भी है कि –

'काल अनन्त निगोद मझार बीत्यो एकेन्द्रियत न धार।'

अतः इस भव में आत्मा को न पहचानने की भूल नहीं करना चाहिए।

आत्मा शक्ति से प्रभु है तथा पर्याय में प्रभु होने की योग्यता है। जिसको ऐसा ज्ञान नहीं है तथा स्वयं विभाव (विकारी भाव) जितना ही अपने को मानता है, वह हीनदशा को प्राप्त करता है। राग की मंदता करते–करते जब यह जीव दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय एवं पंचेन्द्रिय असंज्ञी संज्ञी दशा को प्राप्त करता है; किन्तु वहाँ आकर फिर ऐसी भूल करता है, जिसके कारण पुनः वहीं एकेन्द्रिय में चला जाता है।''

अतः आचार्यश्री एवं गुरुदेवश्री यह प्रेरणा देते हैं कि अब तुम मनुष्य पर्याय एवं उत्तम कुल में आ गये हो – क्षयोपशम और परिणामों में विशुद्धि भी इस योग्य हैं कि तत्त्वज्ञान कर सकते हो, अतः ऐसा काम करो कि पुनः ऐकेन्द्रिय में न जाना पड़े। यह पुरुषार्थ करते–करते

इसी क्रम में चैतन्य आत्मा में उग्र पुरुषार्थ से विकास करते हुए प्रत्यक्षपने स्व–पर पदार्थों को जानने की योग्यता प्रगट हो जाती है। शक्ति अपेक्षा यही शक्ति एकेन्द्रिय जीव में भी हैं। परन्तु वहाँ से निकलकर मनुष्य गति, उत्तम कुल एवं जिनवाणी सुनने की योग्यता मिलना सरल काम नहीं है, अतः यह अवसर नहीं चूकना चाहिए। ●

गाथा – ११३

विगत गाथा में पृथ्वीकायिक आदि पंचविध जीवों के एकेन्द्रियपने का ज्ञान कराया है।

अब प्रस्तुत गाथा में एकेन्द्रिय जीवों के स्वरूप को दृष्टान्त द्वारा समझाते हैं। मूल गाथा इसप्रकार है –

अंडेसु पवड्ढंता गब्भत्था माणुसा य मुच्छगया।
जारसिया तारिसया जीवा एगेंदिया णेया।।११३।।

(हरिगीत)

अण्डस्थ अर गर्भस्थ प्राणी ज्ञान शून्य अचेत ज्यों।
पंचविध एकेन्द्रि प्राणी ज्ञान शून्य अचेत त्यों।।११३।।

इस गाथा में अण्डस्थ गर्भस्थ एवं ज्ञान शून्य अचेत मनुष्य का दृष्टान्त देकर एकेन्द्रिय जीवों का स्वरूप समझाया है।

आचार्य श्री अमृतचन्द्र स्वामी टीका में कहते हैं कि जिस तरह अण्डे में रहे हुए, गर्भ में रहे हुए और मूर्च्छा में पड़े हुए प्राणियों के जीवत्व का बुद्धिपूर्वक व्यापार नहीं देखा जाता, फिर भी उनके जीवत्व का निश्चय किया जाता है। उसीप्रकार – एकेन्द्रिय जीवों के जीवत्व का भी निश्चय किया जाता है; क्योंकि दोनों में ही बुद्धिपूर्वक व्यापार दृष्टिगोचर नहीं होता।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य में निम्न प्रकार कथन करते हैं –

(दोहा)

अंडज अंड विषैं जथा, गर्भज मूर्च्छित जीव।
ज्यौं ए चेतन कहत त्यों एकेन्द्रिय सदीव।।३४।।

(सवैया इकतीसा)

जैसैंकै अंडज–जीव अंडहुविषैं वरतै,
गर्भवाले गर्भ जैसै और मूरछित हैं।
इनमैं कोई चेतना प्रगट तौ दीसै नाहिं,
जीवभाव सब इनही मैं अछित है।।
तैसैंकै एक इंद्रिय जीव चेतनासरूप,
बाहिर व्यापार सबै बुद्धिकै नसित है।
दौनौं जगा बुद्धि व्यापार का अदरसन है,
दृष्टिग्यान दौनौं जगा केवली लखित है।।३५।।

(दोहा)

जैसे अंडादिक विषैं जीव चेतना रूप।
तैसे थावर काय मैं जीव दरब चिद्रूप।।३६।।

जिसतरह अंडज जीव अंडे में तथा गर्भज जीव गर्भ में मूर्छित रहते हैं। उसीतरह एकेन्द्रियादि में भी मूर्च्छित जीव हैं।

यद्यपि उक्त प्राणियों में चेतना प्रगट नहीं दिखती, तथापि वे जीव हैं। उनमें बुद्धि का व्यापार भले हमें दिखाई नहीं देता; किन्तु केवली के ज्ञान स्पष्ट झलकता है उनमें जीव हैं।

इसी गाथा पर व्याख्यान करते हुए गुरुदेव श्री कानजीस्वामी कहते हैं कि जिस तरह पक्षियों के अंडों में जीव बढ़ते हैं, परन्तु अंडे में स्वांस लेता दिखाई नहीं पड़ता, फिर भी अंडा बढ़ता है। इससे ज्ञात होता है कि इसके अन्दर जीव है। तथा जिसतरह नीम, पीपल आदि बढ़ते हैं, उसी प्रकार सभी स्थावर जीव बढ़ते हैं।''

इसप्रकार हम कह सकते हैं कि जिसतरह गर्भ में स्थित जीव ऊपर से मालूम नहीं पड़ता, किन्तु ज्यों–ज्यों पेट बढ़ता जाता है, वैसे ही पेट के अन्दर जीव का शरीर बढ़ता जाता है उसीप्रकार पाँच प्रकार के स्थावरों में ऊपर से चेष्टा दिखाई नहीं देती, फिर भी आगम से, युक्ति से एवं जीवों की अवस्थाओं से उनके जीवत्व का ज्ञान होता है। ●

संगोष्ठी संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ मुमुक्षु आश्रम में आचार्य धरसेन दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा दिनाँक 18 नवम्बर को **'कानजीस्वामी स्मृति दिवस'** मनाया गया।

इस अवसर पर आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा ने की। संगोष्ठी में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के जीवन परिचय व अन्य पहलुओं पर प्रकाश डाला गया।

इस अवसर पर अखिलेश जैन, अध्यात्म जैन, प्रासुक जैन, राहुल जैन, नीतेश जैन आदि विद्यार्थियों ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर श्री सौरभजी, श्री केवलचंदजी एवं श्री रतनचंदजी चौधरी भी उपस्थित थे। संगोष्ठी का संचालन अनुभव जैन ने किया।

पंचकल्याणक हेतु शास्त्री विद्वानों का अभूतपूर्व सहयोग

पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में फरवरी माह में होने जा रहे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु संपूर्ण मुमुक्षु समाज का उत्साह देखने को मिल रहा है। श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के भूतपूर्व स्नातक विद्वान भी इस महामहोत्सव को सफल बनाने के लिए तन–मन–धन से सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहे हैं। पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद की विशेष योजना में अब तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा फंड की विभिन्न मदों में 106 शास्त्री विद्वानों ने लगभग 15 लाख 74 हजार 700 रुपये की राशि सहयोग स्वरूप प्रदान की है, जिसकी सूची नवम्बर (द्वितीय) के अंक में प्रकाशित हो चुकी है। इसके पश्चात् भी अनेक शास्त्री विद्वानों द्वारा सहयोग राशि प्राप्त होने का सिलसिला चालू है। नवम्बर के बाद जो स्वीकृतियाँ आई है, उनकी सूची निम्नानुसार है –

63000/– रु.	पं. जिनचंदजी शास्त्री कोल्हापुर
31000/– रु.	पं. प्रकाश जैन, मुम्बई
21000/– रु.	पं. हेमंत बेलोकर, डासाला
11000/– रु.	पं. विक्रांत शाह, सोलापुर
11000/– रु.	पं. रवीन्द्र नरसाई, बागलकोट
5100/– रु.	पं. सौरभ शास्त्री (शाहपुरा), मुम्बई
5100/– रु.	पं. स्वतन्त्र शास्त्री, जबलपुर
5100/– रु.	पं. चिन्तामण भूष, औरंगाबाद
5100/– रु.	पं. संजय राउत, औरंगाबाद
5100/– रु.	पं. विजय अव्हाने, देवलगांवराजा
5100/– रु.	पं. ऋषिकेश घोडके, औरंगाबाद
5100/– रु.	पं. अनेकान्त शास्त्री, बीजापुर
5100/– रु.	पं. संजयकुमार शाह, बांसवाड़ा
5100/– रु.	पं. प्रेमचंद जैन, अलवर
5100/– रु.	पं. आतिश जोगी, औरंगाबाद
5100/– रु.	पं. विजय कालेगोरे,
5100/– रु.	पं. शाकुल जैन, मेरठ
1,98,200/– रु.	(कुल राशि)

मुक्त विद्यापीठ का परीक्षा कार्यक्रम

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए–4, बापूनगर, जयपुर–15 (राज.) की द्वितीय सेमेस्टर परीक्षा दिनांक 25 से 31 दिसम्बर 2011 तक निश्चित की गई है। तदनुसार परीक्षा प्रश्नपत्र 20 दिसम्बर 2011 तक संबंधित परीक्षार्थियों को डाक द्वारा पहुँचा दिये जावेंगे।

परीक्षा विषय का विस्तृत विवरण

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा द्वितीय सेमेस्टर

प्रथमवर्ष : वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग–दो और वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग–तीन

द्वितीयवर्ष : तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–दो और धर्म के दशलक्षण + भक्तामर स्तोत्र

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा द्वितीय सेमेस्टर

प्रथमवर्ष : रत्नकरण्ड श्रावकाचार 150 श्लोक (केवल श्लोकार्थ) और रामकहानी +आप कुछ भी कहो

द्वितीयवर्ष : मोक्षमार्गप्रकाशक (1 से 5 अधिकार), नयचक्र (निश्चय–व्यवहार नय), हरिवंशकथा + भगवान महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ

तृतीयवर्ष : मोक्षमार्गप्रकाशक (6 से 9 अधिकार), नयचक्र (द्रव्यार्थिक–पर्यायार्थिक नय) और शलाकापुरुष (सम्पूर्ण)

– ओ.पी.आचार्य (प्रबंधक)

ध्वजा परिवर्तन संपन्न

उदयपुर (राज.) : श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जिन चैत्यालय के 42वें वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर दिनांक 12 नवम्बर को ध्वजा परिवर्तन का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर डॉ. महावीर प्रसादजी शास्त्री उदयपुर द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचन हुआ। प्रवचन के पश्चात् सामूहिक जिनेन्द्र पूजन की गई। तत्पश्चात् डॉ. महावीरजी शास्त्री द्वारा विधि–विधान पूर्वक नवीन ध्वजा परिवर्तन का कार्य संपन्न किया गया। ध्वजा परिवर्तन श्री कन्हैयालालजी गंगवाल परिवार द्वारा कराया गया।

इस अवसर पर श्री रंगलालजी बोहरा (मंडल अध्यक्ष), श्री हीरालालजी अखावत (मंदिर अध्यक्ष), श्री लक्ष्मीलालजी बण्डी (मंत्री), श्री सुजानमलजी गदिया, श्री भागचंदजी कालिका एवं श्री कन्हैयालालजी दलावत उपस्थित थे। **– कमल गदिया**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

आगामी कार्यक्रम... (1)

आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग का छठवाँ सेमिनार हैदराबाद में

कुछ लोग आध्यात्मिक सिद्धांतों को समझते ही नहीं और कुछ बुद्धि से समझ तो लेते हैं; परन्तु जीवन का अंग नहीं बनाते; इसलिये जीवन की हर समस्या का समाधान नहीं ढूंढ पाते। आध्यात्मिक सिद्धांतों को पढ़ना अलग बात है और उनको जीवन में उतारना अलग बात है। आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग वर्कशॉप का उद्देश्य यह भावभासन कराना है कि अध्यात्म वर्तमान में भी हमारे जीवन को शांत और सुखमय बनाने में अत्यंत सक्षम है। यह सेमिनार पूर्व में मुम्बई, दिल्ली एवं लोनावाला में भी आयोजित किया जा चुका है। अब यह हैदराबाद में आयोजित होने जा रहा है।

आगामी दिनाँक 8 जनवरी 2012 को हैदराबाद में **JIWO (Jain International Women's organization), JITO (Jain International trade organization)** एवं अन्य संगठनों के तत्त्वावधान में छठवें आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग सेमिनार का आयोजन किया जाएगा।

वर्कशॉप का स्थान – VSP's The Grand Solitaire, 3-6-198 Vasavi Shreemukh, Himayathnagar, Hyderabad.

यह सेमिनार दिव्यध्वनि प्रचार–प्रसार ट्रस्ट द्वारा डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई के निर्देशन में होगा, जिसमें 13 वर्ष से अधिक आयु वाले सभी लोग सम्मिलित हो सकते हैं। इस वर्कशॉप में आने के लिए रजिस्ट्रेशन हेतु संपर्क करें –

(हैदराबाद में)–**Mr. D.C.Galada - 09392525060**

(मुम्बई में)–**Mr. Avinash Kumar Taraiya - 09321295265**

आगामी कार्यक्रम... (2)

आध्यात्मिक संगोष्ठी

श्री दि. जैन महावीर परमागम मंदिर ट्रस्ट द्वारा महावीर परमागम मंदिर महावीर चौक में दिनांक 11 से 16 दिसम्बर तक ब्र. रवीन्द्रजी के सानिध्य में एक आध्यात्मिक संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा। आप सभी सादर आमंत्रित हैं; आवास व भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क रहेगी। **संपर्क सूत्र :** पण्डित महेन्द्रकुमारजी शास्त्री (मंत्री) मो. 09770187377, श्री कौशल किशोरजी (उपमंत्री) मो. 9826235176, श्री वीरसेनजी सर्राफ (अध्यक्ष) मो. 09926558138

खुदाई में प्रतिमा निकली

मौ–भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ रतवा नामक गाँव में छठवें तीर्थंकर भगवान पद्मप्रभ की अत्यंत प्राचीन पाषाण की प्रतिमा एक कृषक को खुदाई में प्राप्त हुई, जिसे गाँव के चैत्यालय परिसर में रखा गया है।

प्रतिमा की जानकारी प्राप्त होते ही अ.भा. जैन युवा फैडरेशन मध्यप्रदेश के प्रदेश संयोजक पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री ग्वालियर स्थानीय फैडरेशन के कुछ सदस्यों के साथ सपरिवार रतवा गाँव पहुँचे व अनेक लोगों के साथ चैत्यालय में रखी उस प्रतिमा के दर्शन, पूजन किये।

द्वितीय महिला शिविर संपन्न

चैतन्यधाम (गुज.) : यहाँ पू.श्री कुन्दकुन्द कहान धर्मरत्न पं. श्री बाबूभाई मेहता दिगम्बर जैन सत् समागम पब्लिक चेरीटेबल ट्रस्ट के अन्तर्गत दिनांक 5 से 8 नवम्बर तक द्वितीय महिला शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर विदुषी राजकुमारी दीदी दिल्ली, डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा, विदुषी अनुप्रेक्षा जैन मुम्बई, विदुषी सविताबेन अहमदाबाद एवं विदुषी सरोजबेन अहमदाबाद द्वारा प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में लगभग 250 मुमुक्षु बहिनों ने धर्मलाभ लिया।

– सचिन शास्त्री

परीक्षा तिथि निश्चित : प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए–4, बापूनगर, जयपुर–302015 (राज.) की **शीतकालीन परीक्षाओं की तिथियाँ जनवरी 2012 में 27, 28 व 29** रखी गई है1

संबंधित परीक्षा केन्द्रों को खाली छात्र प्रवेश फार्म भेजे जा चुके हैं; अत: **शीघ्रातिशीघ्र प्रवेश फार्म भरकर भिजवा देवें।**

जिन परीक्षा केन्द्रों को डाक की गड़बड़ी से खाली प्रवेश फार्म अभी तक भी नहीं मिले हों, कृपया वे तत्काल परीक्षाबोर्ड कार्यालय को सूचित कर मंगा लेवें।

विस्तृत परीक्षा कार्यक्रम अलग से प्रकाशित किया जा रहा है।

– ओ.पी.आचार्य (प्रबंधक)

डॉ. भारिल्ल पुन: अध्यक्ष निर्वाचित

दिल्ली : श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद के अध्यक्ष पद पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल निर्विरोध निर्वाचित हुये। साधारण सभा की बैठक नवीन कार्यकारिणी के चयन एवं अन्य आवश्यक कार्यों के लिये दिनांक 15 जनवरी 2012 को संभावित है, जिसकी सूचना सभी सदस्यों को यथासमय दे दी जायेगी।

स्मरणीय है कि डॉ. भारिल्लजी के विगत कार्यकाल में समयसार वाचना के अतिरिक्त अनेक स्थानों पर समयसार की गोष्ठियाँ, छहढाला शिविर तथा 16 पुस्तकों के माध्यम से विपुल मात्रा में साहित्य का प्रकाशन किया गया। **– डॉ. सत्यप्रकाश जैन (महामंत्री)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

6 से 11 दिसम्बर	दाहोद (गुज.)	पंचकल्याणक
17 व 18 दिसम्बर	सोनगढ	पंचकल्याणक आमंत्रण देने
20 दिसम्बर	राजकोट	पंचकल्याणक आमंत्रण देने
19 से 25 जनवरी 2012	राघौगढ (म.प्र.)	पंचकल्याणक
30 जन. से 5 फरवरी	अजमेर (राज.)	पंचकल्याणक
21 से 27 फरवरी	जयपुर (राज.)	पंचकल्याणक

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

85 तेईसवाँ प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जिसप्रकार वैद्यक शास्त्रों में सभी प्रकार के रोगों की अनेक प्रकार की औषधियों का वर्णन होता है। उन्हें जानना तो अच्छी बात हो सकती है; परन्तु सभी को ग्रहण करना तो उचित नहीं है, ग्रहण तो उन्हीं का उचित है कि जो बीमारी हमें हो। इसीप्रकार **जैन शास्त्रों में अनेक प्रकार के कथन प्राप्त होते हैं। सभी का जानना तो कदाचित् अच्छी बात हो सकती है, पर ग्रहण तो उसी का करें, जिससे अपना विकार दूर होता हो।**

उक्त संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी का कहना यह है –

''जैसे शास्त्रों में कहीं निश्चयपोषक उपदेश है, कहीं व्यवहार-पोषक उपदेश है। वहाँ अपने को व्यवहार का आधिक्य हो तो निश्चय पोषक उपदेश का ग्रहण करके यथावत् प्रवर्ते और अपने को निश्चय का आधिक्य हो तो व्यवहार-पोषक उपदेश का ग्रहण करके यथावत् प्रवर्ते। तथा पहले तो व्यहार श्रद्धान के कारण आत्मज्ञान से भ्रष्ट हो रहा था, पश्चात् व्यवहार उपदेश ही की मुख्यता करके आत्मज्ञान का उद्यम न करे, अथवा पहले तो निश्चय-श्रद्धान के कारण वैराग्य से भ्रष्ट होकर स्वच्छन्दी हो रहा था, पश्चात् निश्चय उपदेश ही की मुख्यता करके विषय-कषाय का पोषण करता है।

इसप्रकार विपरीत उपदेश ग्रहण करने से बुरा ही होता है।[१]''

वस्तुत: आज स्थिति यह है कि जिसे व्यवहार की रुचि है, वह व्यवहार पोषक कथनों से अपनी रुचि का पोषण करते हैं और जिनकी निश्चय की रुचि है; वे लोग निश्चयपोषक कथनों में अपनी रुचि का पोषण करते हैं। इससे हानि यह होती है कि जो पहले से ही एकान्ती था, अब और अधिक दृढ़ एकान्ती हो जाता है। **'करेला और नीम चढ़ा'** कहावत को सार्थक करने लगता है।

अरे, भाई ! जिसप्रकार शीत ज्वर का रोगी गर्म औषधि और ताप ज्वर का रोगी शीतल औषधि को ग्रहण करता है; उसीप्रकार व्यवहार रुचिवाले जिनागम में प्राप्त निश्चय कथनों के माध्यम से अपने ज्ञान, श्रद्धान और आचरण को संतुलित करें और निश्चय रुचिवाले जिनागम में प्राप्त व्यवहार कथनों के माध्यम से अपना ज्ञान, श्रद्धान और आचरण संतुलित करें।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २९८

उक्त संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी का कहना यह है –

''तथा जैसे किसी को अति शीतांग रोग हो तो उसके अर्थ अति उष्ण रसादिक औषधियाँ कहीं हैं; उन औषधियों को जिसके दाह हो व तुच्छ शीत हो, वह ग्रहण करे तो दु:ख ही पायेगा।

उसीप्रकार किसी के किसी कार्य की मुख्यता हो, उसके अर्थ उसके निषेध का अति खींचकर उपदेश दिया हो; उसे जिसके उस कार्य की मुख्यता न हो व थोड़ी मुख्यता हो, वह ग्रहण करे तो बुरा ही होगा।

यहाँ उदाहरण – जैसे किसी के शास्त्राभ्यास की अति मुख्यता है और आत्मानुभव का उद्यम ही नहीं है, उसके अर्थ बहुत शास्त्राभ्यास का निषेध किया है। तथा जिसके शास्त्राभ्यास नहीं है व थोड़ा शास्त्राभ्यास है, वह जीव उस उपदेश से शास्त्राभ्यास छोड़ दे और आत्मानुभव में उपयोग न रहे तब उसका तो बुरा ही होगा।[१]''

आयुर्वेद में कुछ औषधियाँ ऐसी हैं, जिन्हें रस कहा जाता है। उनका उपयोग गंभीर बीमारियों में किया जाता है। जो औषधि गंभीर शीतांग के लिए दी जाती है; यदि उसका उपयोग कम शीतांग या उष्णांग रोगवाला करे तो भयंकर कष्ट में पड़ सकता है। उसीप्रकार **जो व्यक्ति दिन-रात स्वाध्याय में लगा रहता है, आत्मानुभव की ओर कुछ ध्यान ही नहीं देता; उससे स्वाध्याय से विरत होने की बात कही जाती है; उसे सुनकर ऐसा व्यक्ति जो स्वाध्याय करता ही न हो या थोड़ा-बहुत करता हो; वह स्वाध्याय करना ही बंद कर दे तो उसका तो बुरा ही होनेवाला है।**

अरे, भाई ! प्रत्येक कार्य में विवेक चाहिए। जबतक यह प्राणी स्वयं के विवेक को जाग्रत नहीं करेगा; तबतक तो जहाँ भी जायेगा, जो कुछ भी करेगा, सर्वत्र कुछ न कुछ हानि ही होनेवाली है।

इस पर कोई कहता है कि साधारण बुद्धिवाले तो इतना विचार नहीं कर सकते; वे बिचारे क्या करें ? उसका समाधान करते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''जैसे व्यापारी अपनी बुद्धि के अनुसार जिसमें समझे, सो थोड़ा या बहुत व्यापार करे; परन्तु नफा-नुकसान का

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २९९

ज्ञान तो अवश्य होना चाहिए। उसीप्रकार विवेकी अपनी बुद्धि के अनुसार जिसमें समझे, सो थोड़े या बहुत उपदेश को ग्रहण करे; परन्तु मुझे यह कार्यकारी है, यह कार्यकारी नहीं है – इतना तो ज्ञान अवश्य होना चाहिए।

सो कार्य तो इतना है कि यथार्थ श्रद्धान-ज्ञान करके रागादि घटाना। सो यह कार्य अपना सिद्ध हो, उसी उपदेश का प्रयोजन ग्रहण करे; विशेष ज्ञान न हो तो प्रयोजन को तो नहीं भूले; इतनी तो सावधानी अवश्य होना चाहिए। जिसमें अपने हित की हानि हो, उसप्रकार उपदेश का अर्थ समझना योग्य नहीं है।

इसप्रकार स्याद्वाददृष्टि सहित जैनशास्त्रों का अभ्यास करने से अपना कल्याण होता है।[१]''

साधारण बुद्धिवाले व्यापारी भी तो व्यापार करते हैं और उससे अपनी आजीविका भी चलाते ही हैं। यदि वे अपने लाभ-हानि का ध्यान न रखे तो कैसे काम चलेगा ?

इसीप्रकार साधारण बुद्धिवाले भी आत्मकल्याण के कार्य में प्रवृत्त होते हैं और अपना कल्याण करते हैं। शास्त्रों में शिवभूति मुनिराज जैसे लोगों के अनेक उदाहरण भरे पड़े हैं; जिन्होंने अत्यन्त अल्प बुद्धि होने पर भी अपने आत्मा का कल्याण किया। **अल्प बुद्धिवालों को सबसे अधिक सावधानी की बात तो यह है कि वे अपना विवेक जाग्रत रखें और अप्रयोजनभूत विषयों में समय और शक्ति का अपव्यय न करें।**

यहाँ प्रयोजनभूत मूल बात तो मात्र इतनी ही है कि **सही ज्ञान-श्रद्धान करके रागादि को घटाना है।** इस प्रयोजन को ध्यान में रखकर काम करे तो सब ठीक ही होता है।

यहाँ एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जिनमत में जो परस्पर विरुद्ध कथन पाये जाते हैं; उन्हें तो तुम अनेक अपेक्षायें बता-बताकर उनका समाधान करते हो और अन्य मतों में परस्पर विरोधी कथनों को उजागर कर उसे अप्रमाण ठहरा रहे हो – क्या यह उचित है ?

उक्त दुविधा का निराकरण करते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''कथन तो नानाप्रकार के हों और एक ही प्रयोजन का पोषण करें तो कोई दोष है नहीं, परन्तु कहीं किसी प्रयोजन का और कहीं किसी प्रयोजन का पोषण करें तो दोष ही है।

अब, जिनमत में तो एक रागादि मिटाने का प्रयोजन है; इसलिए कहीं बहुत रागादि छुड़ाकर थोड़े रागादि कराने के प्रयोजन का पोषण किया है, कहीं सर्व रागादि मिटाने के प्रयोजन का पोषण किया है; परन्तु रागादि बढ़ाने का प्रयोजन कहीं नहीं है, इसलिए जिनमत का सर्व कथन निर्दोष है।

और अन्यमत में कहीं रागादि मिटाने के प्रयोजन सहित कथन करते हैं, कहीं रागादि बढ़ाने के प्रयोजन सहित कथन करते हैं; इसीप्रकार अन्य भी प्रयोजन की विरुद्धता सहित कथन करते हैं, इसलिए अन्यमत का कथन सदोष है। लोक में भी एक प्रयोजन का पोषण करनेवाले नाना कथन कहे, उसे प्रामाणिक कहा जाता है और अन्य-अन्य प्रयोजन का पोषण करनेवाली बात करे, उसे बावला कहते हैं।[२]''

उक्त कथन में मर्म की बात यह है कि एक कथन के पोषक अनेक कथन हों तो आपत्ति नहीं; **परस्पर विरुद्ध प्रयोजन के पोषक कथनों को प्रामाणिक कैसे माना जा सकता है ?**

जैनदर्शन में राग-द्वेष का कितना कथन क्यों न हो, पर पोषण सर्वत्र वीतरागभाव का ही है; क्योंकि वीतरागता धर्म है। जैनदर्शन में चक्रवर्तियों की विभूति और राग का कितना ही विवेचन क्यों न हो; पर जबतक वे सबकुछ छोड़कर पूर्ण वीतरागी न हों, संयमी न हों; तबतक उन्हें देव-गुरु नहीं माना जाता, अष्टद्रव्य से पूज्य नहीं माना जाता। जबकि अन्य मतों में उन्हें राज्यावस्था में भोग भोगते हुए भी वैसा ही भगवान माना जाता है; जैसा वीतरागी अवस्था में माना जाता है।

यह जो महान अन्तर है, वह ध्यान में रखने योग्य है।

स्वाध्याय के संदर्भ में पण्डितजी का अन्तिम उपदेश इसप्रकार है –

''इसलिए स्यात्पद की सापेक्षता सहित सम्यग्ज्ञान द्वारा जो जीव जिनवचनों में रमते हैं, वे जीव शीघ्र ही शुद्धात्मस्वरूप को प्राप्त होते हैं।[३]

मोक्षमार्ग में पहला उपाय आगमज्ञान कहा है, आगमज्ञान बिना धर्म का साधन नहीं हो सकता; इसलिए तुम भी यथार्थ बुद्धि द्वारा आगम का अभ्यास करना। तुम्हारा कल्याण होगा।[४]''

अत: हमारा भी यही कहना है कि सभी ओर से निशंक होकर तत्त्वार्थ के निरूपक जैनागम का स्वाध्याय विवेक पूर्वक करो, तुम्हारा कल्याण अवश्य होगा। ●

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ ३०१

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ ३०२-३०३
२. समयसार कलश ४
३. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ ३०४

2 दिसम्बर 2011, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा आयोजित साप्ताहिक गोष्ठियों की श्रृंखला में दिनाँक 13 नवम्बर को **'व्रत : एक अनुशीलन'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इसमें जीवेश जैन पिड़ावा (शास्त्री द्वितीय वर्ष) व नितिन जैन झालरापाटन (उपाध्याय वरिष्ठ) श्रेष्ठ वक्ता के रूप में चयनित हुये।

गोष्ठी की अध्यक्षता श्रीमती कमला भारिल्ल जयपुर ने, आभार प्रदर्शन अधीक्षक पण्डित सोनूजी शास्त्री ने, संचालन अभिषेक सिलवानी एवं विपुल बोरालकर (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने तथा मंगलाचरण स्वप्निल वायकोस (उपाध्याय कनिष्ठ) ने किया।

● दिनांक 20 नवम्बर को **मोक्षमार्ग विवेचन : एक संगोष्ठी** विषय पर गोष्ठी का आयेजन किया गया।

इसमें उपाध्याय वर्ग में कु. निधि जैन खनियांधाना एवं शास्त्री वर्ग में स्वतंत्रभूषण जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) श्रेष्ठ वक्ता के रूप में चयनित हुये।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ ने, आभार प्रदर्शन अधीक्षक पण्डित सोनूजी शास्त्री ने, संचालन आकाश जैन एवं अशोक जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने तथा मंगलाचरण आकाश जैन सुनवाहा (उपाध्याय कनिष्ठ) ने किया।

दानदातारों से निवेदन

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के बैंक अकाउंट में इन्टरनेट बैंकिंग द्वारा दानराशि भेजने वाले सभी दातारों से निवेदन है कि वे जो भी दानराशि बैंक में डायरेक्ट जमा कराते हैं, उसकी जानकारी जयपुर कार्यालय को पत्र/ई-मेल/फैक्स/एस.एम.एस. द्वारा अवश्य भेजें, ताकि उसका जमाखर्च कर उसकी रसीद भेजी जा सके।

संपर्क सूत्र : श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15; 0141-2707458, 2705581, फैक्स नं.-2704127

E-mail- info@ptst.in, ptstjaipur@yahoo.com

09314404177 (अकाउन्टेन्ट, जवाहरलालजी जैन)

09785643202 (मैनेजर, पीयूषजी जैन)

आवश्यक सूचना

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, म.प्र. प्रान्त की सभी शाखाओं की जानकारी एक जानकारी फार्म भेजकर मंगायी जा रही है। जिन शाखाओं को अभी तक फार्म प्राप्त नहीं हुये हों कृपया संपर्क करें एवं शीघ्र भरकर भिजवाने की कृपा करें। जो भाई अपने यहाँ फैडरेशन की नवीन शाखा का गठन करना चाहते हैं, वे भी शीघ्र संपर्क करें - पण्डित शुद्धात्मप्रकाश शास्त्री, (म.प्र. प्रान्त संयोजक) ग्वालियर। मो. 09893224022

हार्दिक बधाई !

श्री श्रेयांसकुमारजी कोलकाता के सुपुत्र चि. प्रतीक का सौ.का. अर्चना के साथ दिनांक 13 नवम्बर 2011 को शुभ विवाह संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये की राशि प्रदान की गई।

मुक्त विद्यापीठ के छात्रों हेतु सूचना

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) के द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षायें दिसम्बर 2011 के अंतिम सप्ताह में होने जा रही है। परीक्षा के एक सप्ताह पूर्व सभी परीक्षार्थियों को एनरोलमेंट नम्बर व प्रश्नपत्र भेज दिए जावेंगे। जिन परीक्षार्थियों ने अभी भी परीक्षा की तैयारी शुरु नहीं की है, वे शीघ्र तैयारी में जुट जावें।

ध्यान रहे - परीक्षा बोर्ड कार्यालय से जानकारी चाहने हेतु परीक्षार्थी अपना एनरोलमेंट नम्बर का उल्लेख अवश्य करें; ताकि आपके द्वारा चाही गई जानकारी शीघ्र मिल सके। **- ओ.पी.आचार्य (प्रबंधक)**

शोक समाचार

कारंजा-वाशिम (महा.) निवासी ब्र. देवचंदजी जोहरापूरकर का दिनांक 14 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

ज्ञातव्य है कि आप श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम हाईस्कूल में मुख्य अध्यापक थे।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो-यही मंगल भावना है।

आरक्षण शीघ्र करायें

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु जयपुर आने के लिए ट्रेन के आरक्षण खुल गये हैं। यदि आपने अपना रिजर्वेशन अभी तक न कराया हो तो कृपया शीघ्रता करें।

प्रकाशन तिथि : 28 नवम्बर 2011

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127